पूर्व प्राथमिक शिक्षक शिक्षा में आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम पर एक अध्ययन

सीमा खेर*

प्रस्तावना

व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त सीखता है। बालक जब प्रारंभ में सीखना शुरू करता है तो उसकी क्रियाएँ एवं प्रतिक्रियाएँ अस्पष्ट एवं मिली-जुली होती हैं। धीरे-धीरे उम्र बढ़ने के साथ-साथ वह अपने कार्यों में से त्रुटियों को दूर कर अपने प्रयासों में एकरूपता लाना सीखता है। इस तरह बालक वातावरण के अनुरूप स्वयं को व्यवस्थित करना सीखता है। इस व्यवस्थापन में दो मुख्य तत्त्व कार्य करते हैं — प्रथम, परिपक्वता तथा दूसरा, अनुभव।

व्यक्ति को अनुभव उसके आसपास के सामाजिक वातावरण से प्राप्त होते हैं और वातावरण में निहित चारों तरफ़ की परिस्थितियाँ व्यक्ति पर प्रभाव डालती हैं। इन परिस्थितियों के रहते उसे क्या सीखना है? इसका निर्धारण उसकी आवश्यकता, उसमें निहित शारीरिक, मानसिक, एवं भावात्मक योग्यता एवं क्षमता इत्यादि के आधार पर होता है।

शैक्षिक प्रक्रिया में जिसे सीखना कहा जाता है उसमें ज्ञान, कौशल, अभिक्षमता का विकास, व्यवहार परिवर्तन, व्यक्तित्व विकास इत्यादि का समावेश होता है और इन सभी की उपलब्धि सीखने से होती है। इस हेतु शैक्षिक संस्थाओं द्वारा शैक्षिक प्रक्रिया में पाठ्यक्रम के अंतर्गत समय-समय पर सीखने की नवीन पद्धतियों जैसे — अभिकृमित अनुदेशन, स्व-अधिगम सामग्री, दृश्य-श्रव्य अधिगम सामग्री, कंप्यूटर-आधारित अधिगम सामग्री, शिक्षण प्रतिमान इत्यादि को सम्मिलित किया गया है। अधिगम वृद्धि हेतु विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों का विकास भी किया गया है। इन पाठ्यक्रमों के क्रियान्वयन में शिक्षकों की अहम भूमिका होती है एवं पूर्व-प्राथमिक स्तर सबसे अहम होता है। यह बालक के विकास की प्रथम औपचारिक संस्था होती है अत: पूर्व-प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षा को ही आवश्यकता-आधारित बनाये जाने की आवश्यकता महसूस की गई, जिससे ऐसे शिक्षकों का निर्माण हो सके जो समय के साथ होने वाले परिवर्तनों व परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षण कर सकें।

अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — 2009 में इस बात पर बल दिया

**वरिष्ठ सलाहकार,* प्रारंभिक साक्षरता कार्यक्रम, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

गया है कि शिक्षकों की गुणवत्ता में वृद्धि के लिए उन्हें उत्तरदायी बनाना होगा। इस हेतु उन्हें समाज में होने वाले परिवर्तनों के अनुसार शिक्षण करने की आवश्यकता है।

आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम

आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम में अधिगम प्राप्तकर्ता की विकास अवस्थाओं के अनुरूप उनकी शारीरिक, बौद्धिक, भावात्मक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयुक्त प्रवृत्तियों तथा अनुभवों का आयोजन किया जाता है। शिक्षक-शिक्षा में इस तरह के पाठ्यक्रम हेतु सर्वप्रथम प्रयास मध्यप्रदेश में किया गया। मध्यप्रदेश के सभी सरकारी शिक्षा महाविद्यालयों के सदस्यों ने नये पाठ्यक्रम को तैयार करने हेतु लगातार दो वर्षों तक प्रयास किया। 31 मार्च 1980 को पहला ड्राफ्ट तैयार किया गया। इस पाठ्यक्रम में सिद्धांत और अभ्यास में अंतर, उद्देश्यों पर स्पष्ट केंद्रण का अभाव तथा अपूर्ण उपागम और कौशलों के विकास हेतु अपर्याप्त समय जैसी कमियों को मुख्य कमियों के रूप में निरूपित किया गया। इन कमियों को दूर करने हेतु नीड-बेस्ड बी.एड. करीकुलम का नये युग के शिक्षक-शिक्षा पाठ्यक्रम के प्रतिनिधि के रूप में परिचय हेतु 1980-81 के सत्र के दौरान 'नीड-बेस्ड सिलेबस' प्रयोग के रूप में सरकारी शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) में अपनाया गया। इस पाठ्यक्रम के दिशानिर्देश अस्पष्ट होने से इसकी प्रक्रिया भी अस्पष्ट रही, तथापि यह कार्यक्रम काफ़ी सफ़ल रहा। इसमें आवश्यकताओं की पहचान हेतु स्पष्ट निर्देश नहीं दिये गये। अत: अधिगम आवश्यकताओं की पहचान स्पष्ट करने अथवा उन्हें निर्धारित करने एवं उनकी पूर्ति हेतु प्रस्तुत प्रयोगात्मक अध्ययन निम्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया गया।

उद्देश्य

- आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम (आ.आ.अ.का.) द्वारा प्रशिक्षणार्थियों की पूर्व प्राथमिक शिक्षा हेतु विभिन्न कौशलों एवं व्यवहारों को सीखने की आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम के संदर्भ में प्रशिक्षणार्थियों की प्रतिक्रिया ज्ञात करना।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में आवश्यकता की पहचान हेतु मध्यप्रदेश के इंदौर शहर के 30 पूर्व प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया। सभी चयनित विद्यालयों के प्रधानाचार्यों एवं सभी विषयों के एक-एक प्राथमिक शिक्षकों (कुल 150 शिक्षक) का चयन किया गया।

कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु मध्यप्रदेश के इंदौर शहर के एक स्थानीय नर्सरी टीचर ट्रेनिंग (एन.टी.टी.) सेंटर में आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम प्रयोग के तौर पर वर्ष 2011 में फरवरी से अप्रैल तक तीन माह हेतु अपनाया गया जिसमें दाखिल सभी 22 प्रशिक्षणार्थियों, 7 पूर्व प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षकों, विभागाध्यक्ष एवं 12 विभिन्न पूर्व प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया।

Chapters- PS-April 2016.indd 6 27-07-2017 PM 12:51:56

उपकरण एवं तकनीकें

प्रस्तुत अध्ययन में आवश्यकताओं की पहचान हेतु कक्षा शिक्षण अवलोकन सूची, प्रधानाचार्यों के लिए साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया एवं शिक्षकों के लिए समूह चर्चा का प्रारूप तैयार किया गया। निर्मित आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम के संदर्भ में चयन किये गये शिक्षा संस्थान द्वारा संचालित नर्सरी टीचर ट्रेनिंग के विभागाध्यक्ष, शिक्षक-प्रशिक्षकों, चयनित विशेषज्ञों एवं प्रशिक्षणार्थियों की प्रतिक्रिया अथवा मतों को ज्ञात करने के लिए मतावलियों का निर्माण किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु विषयवस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया क्योंकि प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु प्रयुक्त सभी उपकरण एवं तकनीकों की प्रकृति गुणात्मक है।

आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम का क्रियान्वयन

आ.आ.अ.का. का क्रियान्वयन निम्न दो स्तरों पर किया गया—

1. आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम की रूपरेखा का निर्माण।
2. आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम का क्रियान्वयन।

आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम की रूपरेखा का निर्माण

आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम की रूपरेखा के निर्माण हेतु शोधकर्ता द्वारा मध्यप्रदेश के इंदौर शहर के 30 पूर्व प्राथमिक विद्यालयों का भ्रमण किया गया। जहाँ कक्षा शिक्षण का अवलोकन एवं पाठ्यक्रम का अध्ययन किया गया तथा सभी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से चर्चा की गई एवं सभी विषयों के एक-एक प्राथमिक शिक्षकों (कुल 150 शिक्षक) से भी समूह चर्चा की गई। तत्पश्चात् उपरोक्त 30 प्रधानाचार्यों में से 10 प्रधानाचार्यों का तथा कुल 150 शिक्षकों में से 20 शिक्षकों का चयन आगामी कार्यशाला एवं बैठकों के लिए किया गया। इनके अतिरिक्त 10 पाठ्यक्रम से संबंधित विशेषज्ञों का चयन किया गया। न्यादर्श में सम्मिलित उपरोक्त सभी व्यक्तियों का चयन स्वेच्छा के आधार पर किया गया। कई कार्यशालाओं एवं बैठकों में विचारविमर्श एवं चर्चा के पश्चात् आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम की पूर्व प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा हेतु रूपरेखा तैयार की गई। इस कार्यक्रम में इस बात का ध्यान रखा गया कि प्रशिक्षणार्थियों को उन सभी कौशलों एवं योग्यताओं से संबंधित अधिगम प्राप्त करने हेतु अवसर दिया जाए, जिसे वे सीखना चाहते हैं, ताकि जिन कौशलों एवं योग्ताओं का वे पूर्व में ही अधिगम प्राप्त कर चुके हैं पुन: उनकी पुनरावृत्ति कर अनावश्यक समय व्यर्थ न किया जाए। जो भी उपलब्ध समय, साधन एवं सुविधाएँ हैं उन्हीं के आधार पर जिस सीमा तक प्रशिक्षणार्थियों द्वारा महसूस की गई सीखने की आवश्यकताओं को पूर्ण किया जा सके, किया जाये, जिससे व्यक्तिगत भिन्नता एवं आवश्यकता के अनुरूप अधिगम प्राप्ति का अवसर सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्राप्त हो सके। तैयार रूपरेखा के आधार पर समय-समय पर आवश्यक

Chapters- PS-April 2016.indd 7 27-07-2017 PM 12:51:56

बदलाव एवं सुधार के साथ कार्यक्रम का क्रियान्वयन प्रयोग के तौर पर मध्यप्रदेश के इंदौर शहर के एक स्थानीय संस्थान के नर्सरी टीचर ट्रेनिंग कार्यक्रम हेतु निम्न रूप से किया गया।

आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम का क्रियान्वयन

इस कार्यक्रम के अंतर्गत सर्वप्रथम प्रशिक्षणार्थियों के स्तर के आधार पर उन क्षेत्रों का परिसीमन किया जाता है जो क्षेत्र उनके भावी जीवन के विकास से संबंधित हैं। परिसीमन किये गये क्षेत्रों का अध्ययन करने हेतु प्रशिक्षणार्थियों को विद्यालयों में भेजा जाता है। अध्ययन के पश्चात् प्रशिक्षणार्थी से उन क्षेत्रों हेतु आवश्यक बातों एवं कौशलों को निर्धारित करने के लिए कहा जाता है जिन्हें वे शिक्षण संस्थान के माध्यम से सीखने की आवश्यकता महसूस करते हैं। तत्पश्चात् इन आवश्यकताओं की सूची तैयार की जाती है। इसके उपरांत उपलब्ध समय, साधन, सुविधा इत्यादि के आधार पर विद्यार्थियों की अधिगम आवश्यकताओं की प्राथमिकता तय कर उनकी पूर्ति व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से करने हेतु योजना तैयार की जाती है। इन योजनाओं को क्रियान्वित किया जाता है तथा क्रियान्वयन के दौरान भी आवश्यक फेर-बदल किये जाते हैं। इस तरह आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम उन बातों एवं कौशलों के अधिगम से संबंधित है जिनको प्रशिक्षणार्थी सीखने की आवश्यकता महसूस करते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन चूँकि प्रयोगात्मक अध्ययन था। अत: शत-प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों द्वारा व्यक्त की गई सीखने की निम्न दो आवश्यकताओं को ही उपलब्ध समय, साधन व सुविधाओं अनुसार सम्मिलित किया गया। (1) पॉवर प्वाइंट द्वारा कक्षा शिक्षण का अभ्यास, (2) कक्षा शिक्षण में विद्यार्थियों की सहभागिता में वृद्धि हेतु कार्यक्रमों का निर्माण।

पॉवर प्वाइंट द्वारा कक्षा शिक्षण का अभ्यास तथा कक्षा शिक्षण में विद्यार्थियों की सहभागिता में वृद्धि के लिए कार्यक्रमों के निर्माण हेतु सर्वप्रथम इस क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा न्यादर्श में सम्मिलित सभी 22 प्रशिक्षणार्थियों का पॉवर प्वाइंट द्वारा शिक्षण एवं विद्यार्थियों की सहभागिता के संदर्भ में उनका कक्षा शिक्षण अवलोकन प्रयोग के तौर पर किया गया। तत्पश्चात् प्रशिक्षणार्थियों के प्रदर्शन के आधार पर उनकी कमज़ोरियों एवं उनमें निहित गुणों को ज्ञात कर इस क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा उन्हें दो माह का प्रशिक्षण दिया गया। 15 दिनों के अंतराल के बाद पुन: उन्हीं विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षणार्थियों का कक्षा शिक्षण का अवलोकन किया गया। इस प्रकार प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षण पूर्व एवं बाद में किये गए प्रदर्शनों के आधार पर उनमें आए परिवर्तनों को ज्ञात किया गया। क्रियान्वयन के पश्चात् न्यादर्श में सम्मिलित सभी उत्तरदाताओं से उपयुक्त समय व सुविधा अनुसार प्रदत्तों का संकलन किया गया।

परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के विषयवस्तु विश्लेषण द्वारा आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम के संदर्भ में निम्न परिणाम प्राप्त किये गये।

Chapters- PS-April 2016.indd 8 27-07-2017 PM 12:51:56

- सभी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम को उनके भावी कक्षा शिक्षण हेतु आवश्यक कौशलों, व्यवहारों एवं योग्यताओं को सीखने में अत्यंत उपयोगी माना गया।
- सभी प्रशिक्षणार्थियों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं विशेषज्ञों द्वारा इस कार्यक्रम को अत्यंत व्यावहारिक स्वीकार किया गया।
- सभी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम को व्यावहारिक जीवन से संबंधित आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु भी सक्षम माना गया।
- सभी उत्तरदाताओं द्वारा इस कार्यक्रम को भविष्यवादी माना गया।
- सभी शिक्षक-प्रशिक्षकों, विशेषज्ञों तथा प्रधानाचार्यों द्वारा व्यक्त किया गया कि आ.आ.अ.का. अत्यंत उपयोगी है क्योंकि इसके आधार पर व्यक्तिगत भिन्नता पर आधारित अधिगम आवश्यकताओं की पूर्ति संभव है।
- विशेषज्ञों तथा शिक्षक-प्रशिक्षकों द्वारा स्वीकार किया गया कि आ.आ.अ.का. परंपरागत एवं नवीन परिस्थितियों के मध्य उचित सामंजस्य बनाकर अधिगम प्राप्तकर्ताओं की अधिगम आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।
- शिक्षकों, प्रधनाचार्यों, विशेषज्ञों तथा शिक्षक-प्रशिक्षकों द्वारा व्यक्त किया गया कि यह कार्यक्रम अधिकतम मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों की पूर्ति करता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि आवश्यकता-आधारित अधिगम कार्यक्रम व्यावहारिक, भविष्यवादी एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित होने के कारण शिक्षक शिक्षा हेतु ही नहीं वरन् शिक्षण के किसी भी स्तर पर विद्यार्थियों की अधिगम आवश्कताओं की पूर्ति करने में सक्षम है।

संदर्भ

अग्रवाल, जे.सी. 1990. *राममूर्ति रिपोर्ट (1990) — पॉलिसी ऑन एजुकेशन इन इंडिया*. डाबा हाउस, नयी दिल्ली.

उदय शंकर. 1984. *एजुकेशन ऑफ इंडियन टीचर्स*. स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली.

एन.सी.टी.ई. 2009. *अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा*, नयी दिल्ली.

कुमार, अशोक. 1991. *करंट ट्रेंड्स इन इंडिया एजुकेशन*. एस.बी. फॉर आशिष पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली.

गुप्ता, एन.एल. 1988. *न्यू एजुकेशन पॉलिसी — ए न्यू एरा इन एजुकेशन*. कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर.

नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन. 1978. *टीचर एजुकेशन करिकुलम*. एन.सी.टी.ई., नयी दिल्ली.

मुखर्जी, एस.एम. 1968. *एजुकेशन ऑफ टीचर्स इन इंडिया*. वॉल्यूम 1. एस. चाँद एंड कंपनी, नयी दिल्ली.

Chapters- PS-April 2016.indd 9 27-07-2017 PM 12:51:56